ISSN 2277 - 5730

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

olume - VIII Issue - I January - March - 2019

Hindi Part - II

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖
Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

CONTENTS OF HINDI PART - II

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
25	Mahmoud Sami Al Baroudi Ka Madhiya Qasida **Mubassir ur Rahman**	121-128
26	Usool Sheruz Zuhd Fil Lugatul Arabiya Waemtedaduho Al Zamani Wal Adabi **Mohammed Mujeeb Mohammed Shakeel**	129-131
२७	आधुनिक हिन्दी साहित्य में संस्मरणों का योगदान **डॉ. भगवान पी. कांबळे**	१३२-१३५

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

२७. आधुनिक हिन्दी साहित्य में संस्मरणों का योगदान

डॉ. भगवान पी. कांबळे
सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय,औरंगाबाद.

प्रस्तावना

"आधुनिक हिन्दी साहित्य में अन्य विधाओं की तरह संस्मरण विधा का अपना अलग अस्तित्व है । हिन्दी में अनेक साहित्यकारों ने इसे विधा को विकास की ओर ले जाने का प्रयास किया है । संस्मरण के बारे में कहा जाता है कि, स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख को संस्मरण की श्रेणी रखा जाना उचित होगा । इसके अन्तर्गत यात्रा साहित्य का समावेश होता है । संस्मरण को साहित्यिक निबंध की एक प्रवृत्ति भी माना जा सकता है । ऐसी रचनाओं को संस्मरणात्मक निबंध कहना उचित होगा । विशेषकर व्यापक रुप से संस्मरण आत्मचरित्र के अन्तर्गत लिया जा सकता है मगर संस्मरण और आत्मचरित्र के दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर है । आत्मचरित्र के लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी जीवन कथा का वर्णन करना होता है । इस में कथा का प्रमुख पात्र स्वयं लेखक होता है । इसकी तुलना में संस्मरण लेखक का दृष्टिकोण भिन्न रहता है । इस में लेखक जो कुछ भी स्वयं देखता है और स्वयं अनुभव करता है उसी का चित्रण करता है । लेखक की स्वयं अनुभूतियाँ तथा संवेदनाएँ संस्मरण में अन्तर्निहित रहती है । इस दृष्टि से संस्मरण का लेखक निबन्धकार के अधिक समीप है । वह अपने चारों ओर के जीवन का वर्णन करता है । इतिहासकार के समान वह केवल यथातथ्य विवरण प्रस्तुत नही करता है । साथ ही इस विधा की लेखन परम्पराओं में स्मृति की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । संस्मरण में साहित्यकारों के वे लम्हे अंकित होते हे जिसने उसे स्वयं जिया है, अनुभव किया है संस्मरण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि, इस विधा का सृजनकार अपने प्रिय व्यक्ति के साथ होनेवाली रोचक घटनाओं को लेखा-जोखा प्रस्तुत कर उस पर प्रकाश डालता है । साथ ही हर एक संस्मरणकार अपने संस्मरण में अपने हृदय की अनुभूतीयाँ भी अभिव्यक्त करता है । विशेषकर इस विधा में साहित्यकार का नीजि जीवन या नीजि जीवन में आए हुए अन्य व्यक्तियों का संबंध दर्शाया जाता है । संस्मरण और आत्मचरित्र (जीवनी) में अन्तर यह है कि, संस्मरण जीवन के अंशरुप को चित्रित करता है तो आत्मचरित्र सम्पूर्ण जीवन के रुप को अंकित करता है । पाश्चात्य साहित्यकारों के अलावा अनेक राजनेताओं तथा सेनानायकों ने भी अपने संस्मरण लिखे है जिनका साहित्यिक महत्व स्विकारा गया है । संस्मरण का अपना इतिहास है । साहित्यिक रुप में संस्मरण को लिखे जाने का प्रचलन आधुनिक काल में पाश्चात्य प्रभाव के कारण हुआ है । लेकिन हिन्दी साहित्य में संस्मरणात्मक आलेखों की गद्य विधा का पयाप्त विकास हुआ है । अतः संस्मरण लेखन के क्षेत्रों में अत्यंत प्रौढ तथा श्रेष्ठ रचनाएँ आधुनिक हिन्दी साहित्य में उपलब्ध होती है । इसी कडी मैं मैने अपना शोधालेख संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत करने का अल्पसा प्रयास किया है ।

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

संस्मरण का स्वरुप

संस्मरण शब्द की उत्पत्ति सम+स्मृ-ल्युट (अण) से हुई है, जिसका अर्थ है सम्यक- स्मरण । सम्यक का शाब्दिक अर्थ है- आत्मीयतापूर्वक तथा अधिक गंभीरतापूर्वक । संस्मरण शब्द अधिक आत्मपरकता का सूचक है । संस्मरण का अर्थ हुआ किसी व्यक्ति के संबंध में रमणीय घटनाओं का उल्लेख ।'' १

संस्मरण की व्याख्या (परिभाषा)

डॉ. चंद्रावती सिंह ने अपने हिंदी साहित्य में जीवनचरित का विकास इस ग्रंथ में कहा है कि- ''जीवन की बहुत-सी बातों में, संसार की हलचलों में, दफतर की किसी कार्यवाही में या किसी सभा में जो समय- समय पर बातें घटी हैं उनका अलग-अलग वर्णन संस्मरण कहा जा सकता है । '' २

डॉ. गोविंद त्रिगुणयत ने अपने शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत इस ग्रंथ में संस्मरण के बारे में कहा है कि, -'' भावुक कलाकार जब अतीत की अनंत स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अतिरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तिव की विशेषताओं से विशिष्ट कर रोचक ढंग से यथार्थ रुपमें व्यक्त कर देता है, तब उसे संस्मरण कहते है । '' ३

डॉ. ओमप्रकाश शास्त्री के मतानुसार – '' अतीत की अनत घटनाओं में से कलाकार अधिक स्मरणीय और अधिक रमणीय का चुन संस्मरण लिखता है । '' ४

संस्मरण के प्रमुख तत्व

संस्मरण के प्रमुख तत्वों में वर्ण्य विषय, यर्थाथ का चित्रण, पात्र एवं चरित्र, परिवेश, उद्देश्य और शैली आदि का समावेश किया जाता है ।

हिन्दी के प्रमुख संस्मरणकारों का योगदान

संस्मरण के उद्भव एवं विकास का इतिहास बहुत पुराणा है । इस कला प्राचीन रुप पद्या में प्राप्त होता है । जिसका प्रमण श्री बनारसी दास जैन द्वारा लिखित 'अर्ध्दकथानक' है । संस्मरण विधा के प्रथम संस्मरणकार का श्रेय श्री प्रतापनारायण मिश्र को दिया जाता है । मिश्रजीने १९०७ में हरिऔधजी के संस्मरण ग्रंथ की रचना की । डॉ. श्यामसंदरदास ने सुंदर एवं रसभरे संस्मरण की रचना की है । इसी कडी में श्री रामदास गौड, श्री अमृतलाल चक्रवर्ती, इलाचंद जोशी, वृंदावनलाल वर्मा, श्री निवास शास्त्री, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी और पंडित पदमसिंह शर्मा आदि ने इस विधा लेखन परम्परां को वास्तविक रुप दिया जाता है ।

मैंने अपने शोधालेखन में संक्षिप्त रुप में कुछ प्रमुख संस्मरणकारों के योगदान की चर्चा की है जिसमें महादेवी वर्मा, रामवृख बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, देवेंद्र सत्यार्थी, भदन्त आनन्द कौशल्यायन और कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर आदि के योगदान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

महादेवी वर्मा हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभाव कवयित्रियों में से एक हैं । वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तभों में से एक मानी जाती है । ''५ आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें 'आधुनिक मीरा'के नाम से भी जाना जाता है'' । ६ कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने उन्हें 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा है ।''७ यह सच है कि वर्माजीने भारत को आजादी के पहले भी देखा है और उसके बाद भी देखा है । विशेषकर वर्माजी उन कवियों में से एक है जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करनेवाली दृष्टि देने की कोशिश की । '' ८ उनके द्वारा रचित संस्मरण में पथ के साथी (१९५६) और मेरा परिवार (१९७२) इन दो का उल्लेख किया जाता है । 'पथ के साथी'- में उन्होंने अपने समकालीन रचनाकारों का यर्थाथ चित्रण किया है । साथ जिस सम्मान और आत्मीयतापूर्व ढंग से उन्होंनं इन साहित्यकारों का जीवन –दर्शन और स्वभावगम महानता को स्थापित किया है । वह अपने- आप में बडी उपलब्धि है । पथ के साथी मे संस्मरण भी है और महादेवी वर्मा व्द्ारा पढे गए कवियों के जीवन पृष्ठ भी । इतना ही नही उन्होनें एक ओर साहित्यकारों की निकटता, आत्मीयता और प्रभाव का काव्यात्मक उल्लेख किया है । तो दूसरी ओर उनके समग्र जीवन दर्शन को परखने का प्रयास भी किया है । इस मे कुल ११ संस्मरणों का संग्रह किया गया है । जिसमें १.द्या (मैथली शरण गुप्त), निराला भाई, स्मरण प्रेमचंद, प्रसाद, सुमित्रनन्दन पंत, सुभद्रा (कुमारी चौहान), प्रणाम (वींद्रनाथ ठाकुर), पुण्य स्मरण (महात्मा गांधी), राजेन्द्र बाबू (बाबू राजेन्द्र प्रसाद), जवाहर भाई (जवाहरलाल नेहरू), और संत राजर्शि (पुरुषोत्तमदास टंडन) आदि है । मेरा परिवार – में कुल ७ संस्मरण लिखे है । मैथिली शरण गुप्त ने एक जगह पर महादेवी वर्मा के संस्मरण के बारे में लिखा है – ''मेरी प्रयाग यात्रा केवल संगम स्नान से पूर्ण नहीं होती । उसे सर्वथा सार्थक बनाने के लिए मुझे सरस्वती(महादेवी) के दर्शनों के लिए प्रयाग महिला विद्यापीठ जाना पडता है ।''९ और इाी कडी में देवेन्द्र सत्यार्थी लिखते है- ''एक बार महादेवी वर्मा ने संगम पर तिलक लगाने वालले ब्राम्हण के स्थान पर रुक कर स्वंय अपने हाथ से प्रत्येक साहित्यकार के माथे पर चंदन का तिलक लगाया था । ''१० अत : इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि महादेवी वर्मा साहित्यकारों के आतिथ्य में कितनी अभिरुची लेती थी । इसलिए उनके यहाँ जानेवाले अनेक साहित्यकरों के संस्मरण इस बात के उदाहरण है । आगे चलकर बनारीदास चतुर्वेदी ने 'हमारे आराध्य', रामवृक्ष बेनीपुरी ने माटी मूर्ति में जीवन मे अनायास मिलनेवाले सामान्य व्यक्त्यिों का सजीव एंव संवेदनात्मक कोमल चित्रण किया गया है । साथ ही देवेन्द्र सत्यार्थीजी ने लोक गीतों का संग्रह करने के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राएँ की थी, इन स्थानों के संस्मरणों को भावनात्मक शैली में लिखा है । उनके व्दारा रचित 'क्या गोरी क्या साँवली 'तथा रेखाएँ बोल उठी' अपने ढंग के संस्मरण संग्रह है । भदन्त आनन्द कौशल्यायन ने अपने यात्रा जीवन के विविध घटनाओं तथा परिस्थितियों के बारे में जो अनेक पात्रा मिले उनकें बारे में अपने संस्मरणात्मक आलेखों को संकलनो में विभाजित कर उसका प्रकाशन किया । जिन में 'जो न भूल सका' और 'जो लिखना पडा' है । तो आगे चलकर कन्हैलाल मिश्र प्रभारकरजी ने 'भूले हेये चेहरे' और 'दीप जले शंख बजे' में अपनी भावना व्यक्त की है ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science

निष्कर्ष

अंत में निष्कर्ष के रुप में यह कहना अधिक उचित होगा कि, संस्मरण आधुनिक गद्य साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी विशिष्ठ व्यक्ति के जीवन की किन्हीं मार्मिक और महत्वपूर्ण घटनाओं का संचित स्मृति चित्र के रुप में प्रस्तुत किया जाता है । इस में वर्ण्य व्यक्ति के स्वभाव एवं व्यक्ति की झलक देने के साथ ही साथ स्वयं लेखक के दृष्टिकोण एवं अभिरुचि विशेष का पुट प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहता है । अतः संस्मरणों में लेखककार रागात्मक संबंध होने के कारण इन्हें निष्पक्ष नहीं कहा जा सकता । संस्मरण के लिए निम्नलिखित सुझाव इस प्रकार दिए जाते है-

१. वर्ण्य व्यक्ति के स्वभाव एवं स्वरुप का चित्रण प्रत्यक्ष होना चाहिए ।

२. लेखक का नीजीकरण सन्तलित होना चाहिए ।

३. ममत्व, आत्मीयता एवं रागात्मता से प्रेरित नहीं होना चाहिए ।

४. संस्मरणों में प्रामाणिकता का होना अनिवार्य होता है ।

५. भाषा, भाव व्यंजना लिए हुए चित्रात्मक सूझबूझ से पूर्ण, यर्थाथपरक, सहज, बोध गम्य होनी चाहिए ।

संदर्भसूची

१. डॉ. विश्वास पाटील- वर्णनपरंक साहित्य- पृ२७- प्रकाशन- य.च.म.मु.वि.नासिक ।

२. वही ।

३. वही ।

४. वही ।

५. वशिष्ठ आर.के. –मासिक पत्रिका – उ.प्र. अंक-७ पृ-२४ ।

६. सिंह- पृ-३८-४० ।

७. पांडेय- पृ-१० ।

८. जो रेखाएँ कह न सकेंगी – अभिव्यक्ति ।

९. डॉ. श्रीनिवास शर्मा - हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधी कवि-पृ.११९ प्रकाशन-बिस्ट तक्षिशला प्रकाशन, अन्सारी रोड दरियागंज,नई दिल्ली ।

१०. वही ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad.